7

बाल साहित्य और भाषा शिक्षण

मनोहर चमोली 'मनु'*

कविता बच्चों को आनंदित करती है। बच्चे विद्यालय में आने से पहले ही अनेक गीत और कविताएँ अनायास ही सीख चुके होते हैं, लेकिन विद्यालय आने के बाद धीरे-धीरे कविता में बच्चों की रुचि खत्म होने लगती है। इसका कारण है शिक्षक द्वारा कविता को सही ढंग से प्रस्तुत न करना। कविता पर बातचीत द्वारा कविता बच्चों के लिए सरस भी बनती है और बच्चों में अनेक भाषायी कौशलों का विकास होता चलता है। कविताओं पर बातचीत कैसे की जाए? जानने के लिए पढ़िए यह लेख–

बच्चों में विभिन्न भाषायी कौशलों के विकास के लिए सीखने-सिखाने की प्रकिया के दौरान बाल साहित्य का उपयोग किया जा सकता है। यह भाषा का शिक्षक जानता है और अक्सर वह अपनी कक्षा में पाठ्यपुस्तक से इतर के बाल साहित्य की चर्चा भी करता है। कविताएँ लय और तुकबंदी के कारण सहज ही बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। कक्षा में बच्चों को कविताएँ सुनाने के बाद उन पर बातचीत की जाए तो बच्चों की कविता में रुचि को बढ़ाया जा सकता है। मैंने कक्षा सात और आठ के बच्चों को कुछ बाल कविताएँ पढ़ने को दीं। वह भी तब जब वह मुझे फुरसत में नज़र आए। मैंने यह ध्यान रखा कि एक बार में केवल एक ही कविता पढ़ने को दी जाए। बच्चों ने मन लगाकर उन कविताओं को पढ़ा ही नहीं बल्कि गुनगुनाया भी। कुछ कविताओं को पढ़कर वे मुस्कुराए भी। बच्चों ने कुछ कविताओं को पढ़कर मेरे साथ दिलचस्प बातें साझा कीं। इन कविताओं को पढ़ने-सुनने के बाद बच्चों द्वारा की गई बातों को यहाँ बच्चों के नज़रिए से ही प्रस्तुत किया जा रहा है। कविता की प्रासंगिकता और भाव अपनी जगह महत्वपूर्ण है। पाठक इन कविताओं पर बच्चों द्वारा की गई टिप्पणियों पर विचार करेंगे। मैं यहाँ यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि इस आलेख का आशय यहाँ दी गई कविताओं की समीक्षा नहीं है। एक कविता है–

* *भाषा अध्यापक*, राजकीय हाई स्कूल भिताईं पौड़ी, पौड़ी गढ़वाल, 246001 उत्तराखंड

हुआ सवेरा जागो भैया,
खड़ी पुकारे प्यारी मैया।
हुआ उजाला छिप गए तारे,
उठो मेरे नयनों के तारे।
झटपट उठकर मुँह धुलवा लो,
आँखों में काजल डलवा लो।

कवि— श्रीधर पाठक

बच्चों ने पूरी कविता एक-दूसरे से बार-बार लेकर पढ़ी। फिर मेरी ओर देखने लगे। मैंने कहा, "भैया अब इस कविता के बारे में बात करते हैं। जिसके मन में जो आ रहा है, वह वो बोल सकता है।"

मेरे कहने की देर थी कि एक बच्ची ने कहा, "भैया लोग ही देर में उठते हैं? हम लड़कियाँ तो जल्दी उठ जाती हैं। लेकिन पापा खुद भी देर से उठते हैं और भैया को कुछ नहीं कहते। हमें दिन छिपने से पहले घर में आ जाना होता है, लेकिन भैया लोग अँधेरा होने के बाद भी यहाँ-वहाँ खेलते रहते हैं।"

बच्ची की बात सुनकर मैं हैरान हो गया। मैं तो सोच रहा था कि बच्चे कविता की व्याख्या करेंगे। ये बताएँगे कि इसमें यह कहा गया है, वो कहा गया है। एक बच्चे ने धीरे से कहा, "घर में माँ को ही ज्यादा काम करना पड़ता है। पिताजी जिस दिन घर में रहते हैं, उस दिन भी कुछ नहीं करते। कभी कहीं चले जाते हैं, तो कभी कहीं। कभी उनसे मिलने कोई आ जाता है, तो कभी वे कहीं बैठने चले जाते हैं। खाना खाने के लिए हमें बार-बार उन्हें खोजना पड़ता है।"

बच्चे की बात सुनकर मैं मुश्किल से अपनी हँसी रोक पाया। मैंने कहा, "किसी और को कुछ कहना है?"

एक बच्ची उठकर कहने लगी, "हम तो अपने आप ही अपना मुँह धो लेते हैं। मेरी माँ तो कहती हैं कि काजल नहीं लगाना चाहिए। आँखों में दवाई भी सोच-समझ कर लगानी चाहिए।" उस लड़की की बात सुनकर एक लड़का तपाक से बोला, "लड़कियों को काजल लगाना चाहिए।"

एक बच्ची ने ब्लैकबोर्ड पर लिखी कविता को घूरा और फिर पूछा, "नयन का तारा मतलब?"

मैं चुप रहा और मैंने सभी बच्चों को देखा। एक बच्चा बोला, "यानि घर के बच्चे उठ जाओ।"

मैंने पूछा, "घर के बच्चे मतलब सभी न?" एक बच्ची ने कहा-"नहीं। मतलब ये लड़कों के लिए कहा गया है।"

"क्यों? नयन के तारे लड़के ही होते हैं। लड़कियाँ नहीं?" बच्ची का जवाब सुनने के बाद मैंने पूछा कक्षा की लड़कियों ने सिर झुका लिया और लड़के तनकर खड़े हो गए। मैंने बात बदल दी और कहा, 'अच्छा अब इस कविता को पढ़कर कुछ सवाल बनाओ।'

बच्चे सोच में पड़ गए और कॉपियों पर कुछ लिखने लगे। दूसरे दिन मैंने उनके सवालों को देखा। कुछ सवाल मुझे महत्वपूर्ण लगे थे। जो ये थे-

- हम सोते ही क्यों हैं?
- माँ ही बच्चों का ध्यान क्यों रखती है, पिता क्यों नहीं?
- बच्चों को ही जल्दी उठने की सलाह क्यों दी जाती है?

दो दिन के उपरांत मैंने बच्चों को दूसरी कविता पढ़ने को दी—

यदि होता किन्नर नरेश मैं, राजमहल में रहता,
सोने का सिंहासन होता, सिर पर मुकुट चमकता।
बंदी जन गुण गाते रहते, दरवाजे पर मेरे,
प्रतिदिन नौबत बजती रहती, संध्या और सवेरे।
मेरे वन में सिंह घूमते, मोर नाचते आंगन,
मेरे बागों में कोयलिया बरसाती मधु रस-कण।

कवि - द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

बच्चों ने बड़े उल्लास और आनंद के साथ कविता पढ़ी। उनकी आँखों में मुझे अजीब सी चमक दिखाई दी। मुझे लगा कि यह कविता बच्चों को बेहद पसंद आई है।

मैंने बच्चों से कहा, "इस कविता के बारे में सोचो। खूब सोचो। सोचकर बताओ। अब मैं यह नहीं कहूँगा कि क्या बताना है।"

बहुत देर कक्षा में सन्नाटा छाया रहा। बच्चों ने बारी-बारी से फिर कविता को पढ़ा। एक बच्चे ने कहा, "सोना तो बहुत महँगा है।"

दूसरा बोला, "चुप! ये पुराने ज़माने की कविता है। तब सोने के मकान होते थे। राजा अब कहाँ हैं?''

एक बच्ची ने कहा, "अब तो बाघ हमारे घरों में घुस रहे हैं। हमारे जानवरों को खा रहे हैं।"

एक बच्चे ने मुझसे कहा, "आपने तो कहा था कि मादा कोयल नहीं गाती। नर कोयल गाता है।"

मैंने 'हाँ' में सिर हिलाया। फिर कहा कि अब इस कविता से कुछ सवाल बनाओ। मध्यांतर के बाद मैंने बच्चों के बनाए सवाल देखे। कुछ सवाल ये थे-

- राजा ही सिर पर मुकुट क्यों पहनते थे?
- बंदी से चक्की पिसाना क्या सही है?
- राजा-रानी यदि न्याय करते थे तो वे आज भी जिंदा क्यों नहीं रहे?

बाबा आज देल छे आए,
चिज्जी-पिज्जी कुछ ना लाए।
बाबा, क्यों नहीं चिज्जी लाए,
इतनी देली छे क्यों आए?
काँ है मेला बला खिलौना,
कलांकद लड्डू का दोना।

कवि - श्रीधर पाठक

यह कविता बच्चों ने बार-बार पढ़ी। कक्षा पाँच के बच्चों को यह कविता अधिक पसंद आई। मैंने फिर वही चर्चा की। पूछा, ''चलिए। अब इस कविता पर बातचीत करते हैं।'' एक बच्ची ने कहा, ''ये कौन से वाले बाबा हैं?'' एक बच्चे ने कहा, ''मतलब?'' वही एक बच्ची बोली, ''मतलब ये कि साधू बाबा या भोले बाबा।'' कक्षा के अन्य बच्चे हँसने लगे। एक बच्ची मेरी ओर देखते हुए बोली, ''अरे बाबा। ये बाबा यानि पापा हैं। कोई छोटा बच्चा अपने पापा से पूछ रहा है।'' मैंने कहा, ''ये कोई लड़की यानी बच्ची भी तो हो सकती है।'' सबने सिर हिलाया।

मैंने फिर कहा, ''अब बारी है इस कविता से सवाल बनाने की। चलो हो जाओ शुरू।'' यह कह कर मैंने उन्हें स्वतंत्र छोड़ दिया। बच्चों

ने सामान्य से प्रश्न बनाए, लेकिन कक्षा आठ के बच्चों के कुछ प्रश्न चौंकाने वाले थे। जो कि निम्न हैं—

- घर के बड़े देर से ही क्यों आते हैं?
- खिलौनों से अधिक बच्चों को पढ़ाई के लिए ही क्यों कहा जाता है?
- हम बच्चों के खेलने का सही समय क्या है?
- बच्चों को ज़बरदस्ती दूध पीने के लिए क्यों कहा जाता है?

उठो लाल अब आँखें खोलो,
पानी लाई हूँ मुँह धो लो।
बीती रात कमल-दल फूले,
उनके ऊपर भौंरे झूले।
चिड़िया चहक उठी पेड़ों पर,
बहने लगी हवा अति सुंदर।

कवि - अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

यह कविता बच्चों ने लय के साथ पढ़ी। बार-बार पढ़ी। कविता पढ़ने के बाद बच्चों की बातचीत बड़ी दिलचस्प थी। एक बच्चे ने कहा, ''ये बच्चों को ही बार-बार जगाया क्यों जाता है। जिसे देखो वह यही कहता है कि उठो। जागो। देर तक मत सोओ।'' एक बच्चे ने कहा, ''वैसे फूल तोड़ना अच्छी बात नहीं है। अब तो चिड़िया दाना खाने भी नहीं आतीं।'' दूसरे बच्चे ने कहा, ''हमारे घरों में रंग-बिरंगे फूल तो हैं, लेकिन तितलियाँ फिर भी नहीं आतीं। पता है मेढ़क तो कब से नहीं देखे मैंने।'' मैंने उनकी बातचीत में कोई बाधा नहीं डाली और कक्षा से दूसरी कक्षा में चला गया। कक्षा आठ के बच्चों ने कविता तो पढ़ी, लेकिन कोई विशेष बातचीत नहीं की। कविता से सवाल कुछ हट कर आए। कुछ सवाल दिए जा रहे हैं—

- कविता में लड़कियाँ ज़्यादा क्यों नहीं होतीं? लड़के ही क्यों?
- घर में बच्चों की देख-रेख मर्द क्यों नहीं कर सकते?
- वृक्षारोपण में अच्छे पौधों को उखाड़कर नयी जगह क्यों लगाया जाता है, जबकि वे सूख जाते हैं?
- भौंरा तितली की तरह सुंदर क्यों नहीं होता?

विनती सुन लो हे भगवान,
हम सब बच्चे हैं नादान।
विद्या-बुद्धि नहीं कुछ पास,
हमें बना लो अपना दास।
बुरे काम से हमें बचाना,
खूब पढ़ाना खूब लिखाना।
हमें सहारा देते रहना,
खबर हमारी लेते रहना।
तुमको शीश नवाते हैं हम,
विद्या पढ़ने जाते हैं हम।

कवि - मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी'

यह कविता जब मैंने बच्चों को पढ़ने के लिए दी तो मुझे लगा कि बच्चे इसे पढ़ने में दिलचस्पी नहीं लेंगे, लेकिन बच्चों ने इसे बार-बार पढ़ा। लय और सुर के साथ भी पढ़ा। कुल मिलाकर इस कविता में संगीतात्मकता का पुट ज़्यादा था। यह बच्चों को याद भी हो गई। अगले दिन मैंने कहा, ''विनती सुन लो हे भगवान वाली कविता पर बात करते हैं।''

एक बच्ची ने कहा, "सब कुछ अच्छा है, लेकिन दास बनाने वाली बात ठीक नहीं लगी मुझे।"

थोड़ी देर कक्षा में शांति छा गई। दूसरी बालिका बोली, ''लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि बड़े नादान न हों। और नादानी सिर्फ बच्चे ही नहीं करते।''

एक बच्चा जो अक्सर चुप रहता है। वह बोला, ''पढ़ना-लिखना मन से होता है। इसमें कोई ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए।''

मैंने कहा, "चलिए। एक बार फिर से इस कविता को पढ़िए और कुछ हट कर सवाल बनाइए।"

दो दिन बाद मैंने उन सवालों पर गौर किया। कुछ सवाल ये थे-

- बच्चों की विनती कोई क्यों नहीं सुनता?
- भगवान हमें अपना दास क्यों बनाना चाहेंगे?
- यदि विद्या भगवान देता है तो स्कूल ही क्यों खोले गए हैं?

❑❑❑